A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

धार्मिक सहिष्णुता एवं सांप्रदायिक सौहार्द में सिख गुरुओं का योगदान

Dr. Poonam Chauhan
Assistant Professor (Hindi), Faculty of Education, Teerthanker Mahaveer University, Moradabad

OPEN ACCESS

सार

सिख गुरुओं का योगदान धार्मिक सहिष्णुता और साम्प्रदायिक सौहार्द में अतुलनीय था। उन्होंने अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी धर्म या जाति के बीच भेदभाव और नफरत नहीं होनी चाहिए। सिख धर्म के सिद्धांतों में समग्र मानवता का भला करने, एकता और भाईचारे को बढ़ावा देने का संदेश था। यही कारण है कि सिख गुरुओं की शिक्षाएँ न केवल सिख समाज, बल्कि समूचे संसार के लिए एक आदर्श बन गई हैं। सिख धर्म की स्थापना का श्रेय श्री गुरु नानक देव जी महाराज को दिया जाता है। जब इस धर्म का उदय हुआ, उस समय देश में कई प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ, अंधविश्वास, अन्याय, और असमानताएँ फैली हुई थीं। इस विषय शोध में हम देख पायेंगे कि सिख गुरुओं ने किस प्रकार से समाज में धार्मिक भेदभाव को समाप्त करने और सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना को प्रोत्साहित किया।

शब्द बीज- *धर्म, जाति, गुरु, लंगर, अत्याचार, सिख, कट्टरता*

भूमिका

सिख गुरुओं ने सदैव धार्मिक सहिष्णुता और साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा दिया। उनके योगदान से समर्पण, प्रेम और मानवता के सिद्धांतों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा मिला। सिख धर्म की सृजना के समय समाज में विभिन्न धर्मों के बीच कटुता और असहमति बढ़ रही थी। हिन्दू-मुसलमानों के बीच तनाव था, और सिखों को भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। तत्कालीन शासन व्यवस्था भी अव्यवस्थित और शोषणकारी थी। शासक अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच फूट डालकर, देश की एकता को कमजोर करने का प्रयास करते थे। जनता नैतिक मूल्यों को भूल चुकी थी और दुष्कर्मों की ओर अग्रसर हो रही थी। सदाचार की जगह दुराचार ने ले ली थी। यह वह समय था जब समाज, संस्कृति, राजनीति और धर्म सभी क्षेत्रों में अस्थिरता और अव्यवस्था फैल गई थी। मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा था और जीवन में अराजकता आ गई थी। गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी में उस समय की सामाजिक और धार्मिक दुर्दशा का सजीव चित्रण किया है।

"कलि काती, राजे कसाई धरमु पंखु करि उडरिआ।

कूड़ु अमावस, सचु चंद्रमा दीसै नाही, कह चड़िया।।"1

कलियुग को गुरु नानक देव जी ने एक तेज़ धार वाली छुरी के समान बताया है, और उस समय के शासकों को उन्होंने कसाई जैसा निर्दयी कहा। धर्म का अस्तित्व मानो समाप्त हो गया था—जैसे वह अपने पंख लगाकर कहीं दूर उड़ गया हो। देश में असत्य का अंधकार गहराया हुआ था, और सत्य का उजाला कहीं नज़र नहीं आ रहा था। ऐसी अव्यवस्थित, विषम और बिखरी हुई सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के बीच सिख धर्म की पवित्र और सकारात्मक विचारधारा ने एक सशक्त धारा के रूप में जन्म लिया। उस कठिन समय में, जब हर ओर स्वार्थ, अन्याय और भेदभाव व्याप्त था, सिख धर्म का उदय एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह हुआ। इसने लोगों को अज्ञान के अंधेरे से निकालकर ज्ञान, प्रेम और भाईचारे की रोशनी की ओर अग्रसर किया। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने अपनी वाणी और शिक्षाओं से मानवता की नींव मजबूत करने का काम किया, जिसके लिए यह देश सदियों तक उनका आभारी रहेगा। गुरु जी ने जीवन में तीन मुख्य सिद्धांत अपनाने की प्रेरणा दी—

नाम जपना

अपनी आस्था अनुसार ईश्वर का स्मरण करना, किरत करना: मेहनत और ईमानदारी से जीवन यापन करना,वंड छकना: दूसरों के साथ मिल-बांट कर भोजन व संसाधनों को साझा करना। उन्होंने 'ना को हिंदू, ना को मुसलमान' कहकर यह संदेश दिया कि सब मनुष्य समान हैं और हमें धर्म व जाति के भेदभाव से ऊपर उठकर प्रेमपूर्वक एक-दूसरे के साथ व्यवहार करना चाहिए। सिख गुरु साहिबानों ने यह स्पष्ट किया कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—सभी की उत्पत्ति एक ही ईश्वर से हुई है। समस्त सृष्टि उसी परमात्मा का अंश है, और इसीलिए सभी मनुष्य एक समान हैं। उनकी शिक्षाएँ केवल किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं थीं, बल्कि वे हर धर्म, जाति और समुदाय के लिए प्रासंगिक थीं। इसी कारण आज भी सिख गुरु साहिबानों के विचारों और सिद्धांतों को सभी धर्मों और वर्गों के लोग श्रद्धा और प्रेम से स्वीकार करते हैं। आपसी प्रेम, मानवता और देश की एकता को सुदृढ़

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

करने के उद्देश्य से लंगर प्रणाली (सामूहिक भोजन व्यवस्था) एक जीवंत उदाहरण है, जो सिख धर्म में इसकी शुरुआत से ही प्रचलित रही है। इस परंपरा में कोई जातिगत या धार्मिक भेदभाव नहीं होता—चाहे व्यक्ति अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष, राजा हो या रंक, सभी एक समान स्तर पर एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। "लंगर की मर्यादा का आरम्भ तो गुरु नानक देव जी ने करतारपुर में ही कर दिया था पर गुरु अंगद देव जी के दरबार, खडूर साहिब में इसको और अधिक महत्व दिया गया। लंगर वास्तव में वर्ण-आश्रिमी के मत द्वारा प्रचारित ऊँच-नीच के भेदभाव को मार मिटाने के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी साधन सिद्ध हुआ। वाणी के प्रचार द्वारा ऊँची-नीची जातियों के भेदभाव तो मिटते ही थे, पर लंगर की मर्यादा ने उच्च स्तरीय हिन्दुओं के ''सुचे चौके'' के भ्रम पर तो कठोर वार कर दिया। लंगर में सब लोग आपस में एक पंक्ति में बराबर होकर बैठते थे। यहाँ किसी भी जाति के संग कोई विषेष व्यवहार नहीं किया जाता था और इसी प्रकार लंगर तैयार करने में भी हर व्यक्ति शामिल हो सकता था, केवल सफाई के नियमों का पालन और श्रद्धा भावना की आवश्यकता थी।।"2 सिख धर्म की परंपरा गुरु नानक देव जी से शुरू होकर आगे के नौ गुरु साहिबानों तक निरंतर मानवीय मूल्यों, प्रेम, सेवा और समानता का संदेश देती रही।

- गुरु अंगद देव जी विनम्र और परिश्रमी थे।
- गुरु अमरदास जी सेवा और समर्पण के प्रतीक थे।
- गुरु रामदास जी प्रेम, सौंदर्य और भक्ति में समर्पित रहे।
- गुरु अर्जुन देव जी शांति, विद्वता और शहादत के प्रतीक बने।
- गुरु हरिगोबिंद जी ने भक्ति (पीरी) और शक्ति (मीरी) को जोड़ा।
- गुरु हरिराय जी उदार और करुणाशील थे।
- गुरु हरिकृष्ण जी ने बहुत कम उम्र में सेवा भाव और करुणा का उदाहरण पेश किया।
- गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म और मानवता की रक्षा हेतु बलिदान दिया।
- गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना कर धर्म, न्याय और समानता के लिए संघर्ष किया।

दस सिख गुरुओं की परंपरा के पश्चात, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने सिख धर्म की दिव्य और लोकहितकारी शिक्षाओं को स्थायी स्वरूप देते हुए 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को अंतिम और शाश्वत गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह पावन ग्रंथ आज भी सही और गलत के बीच भेद करने वाला, जीवन के मार्गदर्शन हेतु एक अखंड प्रकाश स्तंभ की भांति हमारे साथ विद्यमान है। सिख गुरु साहिबानों ने सदा सत्य का साथ दिया और मानवता व राष्ट्र के विरुद्ध फैले हर प्रकार के दूषित विचारों का दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उनका दृष्टिकोण केवल धर्म या समाज तक सीमित नहीं था, बल्कि वे पूरे विश्व के कल्याण की भावना से ओतप्रोत थे। आज ज़रूरत इस बात की है कि हम उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाएँ और देश व समाज की भलाई के लिए उनके सिद्धांतों को व्यवहार में लाएँ। राष्ट्र के समग्र विकास के लिए केवल धार्मिक समरसता ही नहीं, बल्कि स्त्री और पुरुष के बीच समानता भी अत्यंत आवश्यक है। समाज में सभी को समान अधिकार, सम्मान और अवसर मिलें—यही सिख धर्म की मूल भावना है। राष्ट्र के विकास में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भागीदारी आवश्यक है। यही कारण है कि सिख गुरु साहिबानों ने स्त्री और पुरुष के बीच कभी कोई भेदभाव नहीं किया। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था कि नारी जीवन की उत्पत्ति का स्रोत है। उन्होंने कहा "सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान" अर्थात् जिस नारी की कोख से राजा जैसे महान पुरुष जन्म लेते हैं, उसे तुच्छ कैसे कहा जा सकता है? सिख गुरुओं ने नारी को समाज में सम्मान, समान अधिकार और स्वाभिमान दिलाने के लिए ठोस कदम उठाए। उन्होंने सती प्रथा और पर्दा प्रथा जैसी रूढ़ियों का विरोध किया, क्योंकि ये परंपराएँ स्त्री के आत्मबल और उसके समग्र विकास में बड़ी बाधा थीं। उनका मानना था कि समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए स्त्री और पुरुष दोनों का बराबर का योगदान आवश्यक है। उस समय देश में व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार और विदेशी आक्रांताओं की लूट ने आम जनता का जीवन दयनीय बना दिया था। शासक और उनके सहयोगी भोली-भाली जनता के अधिकार छीनकर, उनकी मेहनत की कमाई को जबरन हड़प लेते थे। चारों ओर असत्य, लालच, छल-कपट और अनैतिकता का बोलबाला था। ऐसे हालातों में सिख गुरु साहिबानों ने स्पष्ट रूप से कहा कि जो भी व्यक्ति मोह-माया के भ्रम में फँसकर पाप करता है, और जो ऐश्वर्य, सुख-सुविधाएँ तथा धन-दौलत वह दूसरों को धोखा देकर प्राप्त करता है—वे सब कुसुंभ के फूल की तरह हैं, जिनका रंग कुछ समय बाद फीका पड़ जाता है। अर्थात् यह सब सुख-दौलत क्षणिक है और इसके पीछे भागकर मानव केवल अपने पतन को आमंत्रित करता है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

"एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा।।

एहु माइआ रंगु कसुंभ खिन महि लहि जावणा।।"3

मानवता और देश की रक्षा के लिए सिख गुरु साहिबानों का बलिदान सदैव स्मरणीय और प्रेरणादायक रहेगा। उन्होंने धर्म, सत्य और राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। जात-पात के भेदभाव को मिटाने और एकता का संदेश फैलाने हेतु सिख गुरुओं ने सूली पर चढ़ना, अंग-भंग कराना, आरे से चीरना और चरखियों पर चढ़ना तक सहन किया, पर कभी सत्य के मार्ग से पीछे नहीं हटे।

सिख बलिदान की यह परंपरा पाँचवें गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज से शुरू होती है। उन्होंने अपार यातनाएँ सहकर भी मानवता को यह संदेश दिया कि धर्म, देश और सत्य की रक्षा के लिए जीवन की आहुति देना भी गौरव की बात है। उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि झूठ और अधर्म के आगे झुकने से बेहतर है, सत्य और स्वाभिमान के लिए वीरगति को अपनाना। उनके पश्चात छठे गुरु श्री गुरु हरगोबिंद सिंह जी महाराज ने सिख परंपरा में एक साहसिक और क्रांतिकारी बदलाव किया। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए युद्ध कौशल और सैन्य संगठन की शुरुआत की। गुरु जी ने दो तलवारों को धारण किया, एक मीरी (शक्ति) की प्रतीक थी, जो सत्ता और साहस का प्रतिनिधित्व करती थी, दूसरी पीरी (भक्ति) की प्रतीक थी, जो अध्यात्म और सेवा भाव का प्रतीक थी। इन दोनों सिद्धांतों के समन्वय से गुरु जी ने यह बताया कि धर्म की रक्षा केवल प्रार्थना से नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर साहसिक संघर्ष से भी की जाती है। मीरी अर्थात शक्ति की तलवार की स्थापना का उद्देश्य था—देश की एकता और अखंडता को तोड़ने की साजिश रचने वाले देशविरोधियों, अत्याचारियों और स्वार्थ में अंधे होकर मानवता का हनन करने वालों को रोकना। यह तलवार अन्याय के अंत और सत्य, ईमानदारी और भाईचारे की स्थापना का प्रतीक थी। हिंद की चादर, नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का बलिदान न केवल धर्म की रक्षा के लिए, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण हेतु था। उनका यह त्याग राष्ट्रहित और जनकल्याण की ऐसी मिसाल है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। गुरु तेग बहादुर जी के समय में औरंगजेब कट्टरता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। वह पूरे भारत में जबरन धर्मांतरण के माध्यम से केवल अपने धर्म का वर्चस्व स्थापित करना चाहता था। धार्मिक असहिष्णुता के चलते वह निर्दोष जनता को अमानवीय यातनाएँ देने लगा था। धार्मिक अत्याचारों की शुरुआत उसने कश्मीरी पंडितों से की, क्योंकि उसे विश्वास था कि यदि ये विद्वान और सम्मानित वर्ग धर्मांतरण स्वीकार कर लेगा तो शेष समाज को भय दिखाकर वह आसानी से झुका सकेगा। इस कठिन समय में कश्मीरी पंडितों को जब यह ज्ञात हुआ कि श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी, जो कि उदार, परोपकारी और सेवाभावी थे, उनकी सहायता कर सकते हैं, तो लगभग 500 कश्मीरी पंडित गुरु जी की शरण में पहुँचे और अपने संकट का समाधान माँगा। गुरु जी की ख्याति जन-जन तक फैली हुई थी, और लोगों को उनके न्यायप्रिय व निर्भीक स्वभाव पर पूर्ण विश्वास था। तब "उन्हें गुरु जी ने बतलाया कि बिना किसी महापुरुष का बलिदान किये हिन्दू-धर्म की रक्षा असम्भव है। उस समय इनका पुत्र गोबिन्द (श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज) एक छोटा सा बालक था और वहीं पर बैठा हुआ था। उनकी बातों को सुनकर वह सहसा बोल उठा, पिता जी, यदि ऐसी ही बात है तो भला ऐसे बलिदान के लिए आपसे अधिक योग्य और कौन मिलेगा।

कश्मीरी पण्डितों ने इस घटना को एक निश्चित संकेत मान इसकी सूचना बादशाह को दे दी"4 इसके पश्चात गुरु तेग बहादुर जी महाराज को दिल्ली लाया गया, जहाँ उन्हें एक लोहे के पिंजरे में बंद कर कैद कर दिया गया। उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं और जबरन धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया। लेकिन गुरु जी ने स्पष्ट रूप से इनकार करते हुए कहा कि धर्म तो ईश्वर का दिया हुआ है, किसी पर दबाव डालकर उसका धर्म छीनना अन्याय है। लेकिन औरंगजेब, जो अत्याचार और कट्टरता के मार्ग पर चल रहा था, इन बातों को कहाँ समझने वाला था। उसने गुरु जी को डराने और तोड़ने के लिए, उनके समर्पित शिष्यों पर क्रूर अत्याचार किए। भाई मति दास जी को आरे से चीर डाला गया, भाई सती दास जी को रूई में लपेट कर आग में जला दिया गया, और भाई दयाला जी को उबलते पानी में डालकर शहीद कर दिया गया। इन सब अत्याचारों के बीच भी गुरु तेग बहादुर जी पूर्ण शांति और ध्यान में लीन रहे। उन्होंने धर्म और देश की अखंडता की रक्षा के लिए अपनी अडिग निष्ठा नहीं छोड़ी। पिंजरे में कैद श्री गुरु तेग बहादुर अपनी आँखों से सब जुल्म अत्याचार होते हुए अडोल चित्त होकर देखते हुए गुरु वाणी के पाठ की पंक्तियां पढ़ रहे थे कि 'जो नरु दुःख में दुःख नहीं माने सुख सनेही अर भय नहीं जाके कंचन माटी मानै' गुरु तेग बहादुर जी को भी पिंजरे से निकाला गया इन्हें भी तीनों सिखों की दशा बतायी और दिखाई गयी और उनसे पूछा गया तब गुरु तेग बहादुर जी ने कहा कि मेरे सिखों ने मुझपर दृढ़ विश्वास करके विभिन्न प्रकार के कष्ट सहते हुए अपनी कुर्बानियां दी हैं और मुझे जान बचाने के लिए कह रहे हो"5 अंततः जब औरंगजेब ने देखा कि गुरु तेग बहादुर जी न भयभीत हो रहे हैं, न झुक रहे हैं, तो उसने अपना धर्मांतरण का षड्यंत्र बलपूर्वक थोपने का अंतिम प्रयास किया , परंतु वह असफल रहा और फिर दिल्ली के चाँदनी चौक में, गुरु जी को निर्दयता से शहीद कर दिया गया। यह स्थान आज गुरुद्वारा शीश गंज साहिब के रूप में उनकी अमर शहादत

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

का प्रतीक है। वहीं, गुरुद्वारा रकाबगंज भी उस महान बलिदान को ससम्मान स्मरण करता है, जहाँ गुरु जी के पावन शरीर का संस्कार किया गया। गुरु तेग बहादुर जी की शहादत पर उनके पुत्र गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने इन शब्दों के माध्यम से अपना दुख व्यक्त किया-

"तेग बहादर के चलत भयो जगत को षोक।।

है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक।।"6

लोककल्याण, धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए शुरू हुई बलिदान की यह कथा यहीं पर समाप्त नहीं हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन को पूरी तरह से मानवता, धर्म और राष्ट्र की सेवा में अर्पित कर दिया। यही कारण है कि उन्हें "सरबंस दानी" (संपूर्ण परिवार का बलिदान देने वाले) कहा जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने पूरे परिवार को मानवता और धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी माता गुजरी जी, जो सरहिंद के ठंडे बुर्ज में शहीद हुईं, और दो बड़े पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह, जो चमकौर साहिब के युद्ध में शहीद हुए, और छोटे पुत्र जोरावर सिंह और फतह सिंह, जो सरहिंद में दीवार में चिनवा कर शहीद हुए, सभी को धर्म की रक्षा के लिए शहीद होते देखा। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने सम्पूर्ण परिवार का बलिदान देने के बाद मानवता और धर्म की सेवा में अपने वंश का समर्पण किया। इन बलिदानों के बारे में सुनकर जनमानस में श्रद्धा और साहस का संचार होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की, जो दुर्जनों का नाश और सज्जनों की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली संगठन था। इस पंथ की स्थापना के माध्यम से उन्होंने धर्म की रक्षा और दुष्टों का दमन करने के लिए एक सशक्त शक्ति का निर्माण किया।

निष्कर्ष

सिख गुरु साहिबानों की वाणी केवल सिख धर्म के अनुयायियों के लिए, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। गुरु साहिबानों ने अपने जीवन में धर्म, सत्य, न्याय, वीरता, परोपकार, दया और देश की भलाई के सिद्धांतों को लागू किया और इन सिद्धांतों को 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में संजोकर सम्पूर्ण मानवता के सामने प्रस्तुत किया। इसमें भेदभाव को समाप्त करने, आपसी प्रेम, भाईचारे, सहिष्णुता, दया, और परोपकार के मूल्य दिए गए हैं, जो हमें एक बेहतर समाज बनाने की प्रेरणा देते हैं। गुरु साहिबानों की वाणी में लोकमंगल की भावना और समाज के कल्याण के लिए अडिग प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है और विश्वभर में शांति, प्रेम और समानता का संदेश देती है।

संदर्भ

1. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी, माझ महला-१, अंग-१४५.
2. जोश, स. महिंदर सिंघ, जीवन वृतांत श्री गुरु अंगद देव जी. सिख मिषनरी कालेज (रजिः), लुधियाना. पृष्ठ संख्या 36.
3. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी, वार सोरठि, महला-४, पाउड़ी-६, अंगः-६४५.
4. उत्तरी भारत की संत परंपरा. पृष्ठ संख्या 390.
5. तीर, रवेल सिंह. (2016-17) ज़रा याद करो कुर्बानी, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाषोत्सव पर विषेषांक. १०४, दशमेष नगर, सिविल लाइंस, रामपुर. पृष्ठ संख्या 5.
6. दशम ग्रंथ साहिब जी, अंगः-५४.